स्वामी विवेकानंद के आवक्ष प्रतिमा के अनावरण पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का सम्बोधन

- मेक्सिको की धरती पर हिडालगो स्वायत्त यूनिवर्सिटी के कैम्पस में भारत मां की महान संतान स्वामी विवेकानंद जी की मूर्ति के अनावरण कार्यक्रम के अवसर पर उनको सादर नमन।
- इस यूनिवर्सिटी की स्थापना 1869 में हुई थी, उसी वर्ष हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी जन्म हुआ था। यूनिवर्सिटी का मूलमंत्र Love, Order and Progress है। अपने इसी मूलमंत्र के आधार पर चलता हुआ यह यूनिवर्सिटी आज एक समावेशी समाज और राष्ट्र के लिए संकल्पित है।
- और यही स्वामीजी का भी आदर्श था। भारत से स्वामी जी की सीख और उनके व्यक्तित्व के कारण आज भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में लोग उनसे प्रेरणा ले रहे हैं, उनके आदर्शों पर चलने की शपथ ले रहे हैं।
- शिकागो में स्वामी विवेकानंद के 1893 के भाषण को आज हर भारतीय, आध्यात्मिकता में रुचि रखने वाले हर विद्वान याद करते हैं

जिसने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को खूबसूरती से प्रदर्शित किया था।

- स्वामीजी का संदेश देश और काल की सीमा से परे सम्पूर्ण मानवता के लिए है। इसलिए स्वामी जी की मूर्ति का मेक्सिको में अनावरण अत्यंत स्वाभाविक है। स्वामीजी भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ गुणों का प्रतिबिंब हैं।
- उनके भाषण का सार यही था कि चरित्र निर्माण के माध्यम से एक न्यायपूर्ण, समृद्ध और समावेशी दुनिया बनाई जा सकती है।
- स्वामी विवेकानंद ने एक और अनमोल उपहार दिया है। यह उपहार है, व्यक्तियों के निर्माण का, संस्थाओं के निर्माण का। स्वामी जी ने जो देश और समाज को दिया है, वो समय और स्थान से परे, हर पीढ़ी को प्रेरित करने वाला है, रास्ता दिखाने वाला है।
- व्यक्ति से संस्था का निर्माण और संस्था से अनेक व्यक्तियों का निर्माण, ये एक सतत चक्र है, जो चलता ही जा रहा है। लोग स्वामी जी के प्रभाव में आते हैं, संस्थानों का निर्माण करने की प्रेरणा लेते हैं, संस्था का निर्माण करते हैं, फिर उन संस्थानों से उसकी व्यवस्था से, प्रेरणा से, विचार से, आदर से ऐसे लोग निकलते हैं जो स्वामी जी के दिखाए मार्ग पर चलते हुए नए लोगों को खुद से जोड़ते चलते हैं।

- Individuals और Institutions का ये चक्र देश और समाज के हर क्षेत्र, हर स्तर के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है।
- भारत का शायद ही ऐसा कोई गाँव हो, कोई शहर हो, कोई व्यक्ति हो, जो स्वामी जी से खुद को जुड़ा महसूस न करता हो, उनसे प्रेरित न होता हो। स्वामी जी की प्रेरणा ने सदियों से गुलामी झेलते भारत के युवाओं को आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए नई ऊर्जा दी थी।
- गुलामी के लंबे कालखंड ने भारत को हज़ारों वर्षों की अपनी ताकत और ताकत के एहसास से दूर कर दिया था। स्वामी विवेकानंद ने भारत को उसकी ताकत याद दिलाई, अहसास कराया, उनमें सामर्थ्य को, उनके मन-मष्तिष्क को पुनर्जीवित किया, राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया।
- स्वामीजी ने शांति के मार्ग पर चलने वालों और क्रांति के मार्ग पर चलने वालों, दोनों को ही प्रेरित किया था। आज भी स्वामी जी के विचार हमारे बीच ही होते हैं, प्रतिपल हमें प्रेरणा देते हैं, उनका प्रभाव हमारी चिंतनधारा में कहीं न कहीं नजर आता है।

- अध्यात्म को लेकर उन्होंने जो कहा, राष्ट्रवाद-राष्ट्रनिर्माण-राष्ट्रहित को लेकर उन्होंने जो कहा, जनसेवा से जगसेवा को लेकर उनके विचार आज भी हमें प्रेरित करते हैं।
- स्वामी जी ने कहा था कि निडर, साहसी और आकांक्षी युवा ही वह आधार है जिस पर राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है। उनका युवाओं पर, युवा शक्ति पर अखंड विश्वास था।
- उनका मानना था कि जब लक्ष्य स्पष्ट हो, इच्छाशक्ति हो, तो उम्र कभी बाधा नहीं बनती है। उम्र इतनी मायने नहीं रखती। गुलामी के समय में आजादी के आंदोलन की कमान युवा पीढ़ी ने ही संभाली थी।
- स्वामी विवेकानंद जी कहते थे कि हमारे युवाओं को आगे आकर राष्ट्र का भाग्यविधाता बनना चाहिए। इसलिए हमारे युवा चाहे वे किसी भी देश के हों, किसी भी समाज के हों, उनका दायित्व है कि वे एक बेहतर विश्व के लिए, एक बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए कार्य करें।
- आज स्वामी विवेकानंद जैसे युगपुरुष की मूर्ति के सामने हमें यही संकल्प लेना है कि हम एक न्यायपूर्ण, समता मूलक और समावेशी समाज के निर्माण में अपना योगदान दें।
- आपका बहुत बहुत धन्यवाद।